शब्द शक्ति की परिभाषा

शब्द में अर्थ सूचित करने की क्षमता को ही शब्द - शक्ति कहा जाता है। शब्दशक्ति में शब्द के ऐसे व्यापार पर विचार किया जाता है, जो शब्दार्थ बोध में सहायक होता है। इस प्रकार जिस शक्ति के द्वारा शब्द में अन्तनिहित अर्थ को स्पष्ट करने अथवा ग्रहण करने में सहायता मिलती है उस माध्यम को शब्द शक्ति कहते हैं।

शब्द के तीन भेद होते हैं

- वाचक (वाच्यार्थ)
- लक्षक (लक्ष्यार्थ)
- व्यंजक (व्यंग्यार्थ)

इन्हीं पर आधारित अर्थ भी तीन प्रकार का होता है

जो शब्द प्रत्यक्ष रूप से संकेतिक अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें वाचक शब्द कहते हैं और उनके अर्थ को वाच्यार्थ या अभिधेयार्थ कहते है।

वाचक शब्दों के चार भेद होते हैं जातिवाचक, गुणवाचक, क्रियावाचक और द्रव्य वाचक। जो शब्द स्ववाच्य समस्त जाति का बोध कराता है, उसे जातिवाचक कहते हैं। जो शब्द विशेषण का कार्य करता है उसे गुणवाचक कहते हैं। जो शब्द क्रिया को निमित्त मानकर प्रवृत्त होते हैं, वे क्रियावाचक कहलाते है और जिनसे केवल एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उन्हें द्रव्यवाचक शब्द कहते हैं।

जो शब्द प्रत्यक्ष रूप से संकेतिक अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें वाचक शब्द कहते हैं और उनके अर्थ को वाच्यार्थ या अभिधेयार्थ कहते है।

वाचक शब्दों के चार भेद होते हैं जातिवाचक, गुणवाचक, क्रियावाचक और द्रव्य वाचक। जो शब्द स्ववाच्य समस्त जाति का बोध कराता है, उसे जातिवाचक कहते हैं। जो शब्द विशेषण का कार्य करता है उसे गुणवाचक कहते हैं। जो शब्द क्रिया को निमित्त मानकर प्रवृत्त होते हैं, वे क्रियावाचक कहलाते है और जिनसे केवल एक ही व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उन्हें द्रव्यवाचक शब्द कहते हैं।

अभिधा शब्द शक्ति की परिभाषा

Abhidha Shabd Shakti Ki Paribhasha

" अभिधा को ' शब्द की प्रथमा शक्ति ' भी कहा जाता है। "

परिभाषा – अभिधा का अर्थ है – नाम , अतः वक्ता द्वारा बोले गये शब्द के साधारण एवं व्यवहारिक अर्थ को धारण करने वाली शक्ति को ' अभिधा शक्ति ' कहा जाता है।

अभिधा शब्द शक्ति किसे कहते है ?

Abhidha Shabd Shakti Kise Kahate Hain

किसी शब्द के मुख्यार्थ का, वाच्यार्थ का , संकेतित अर्थ का या अभिधेय अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति , अभिधा शब्द शक्ति कहलाती है।

" अनेकार्थक हू सबद में , एक अर्थ की भक्ति।
तिहि वाच्यारथ को कहे , सज्जन अभिधा शक्ति ॥ "

आचार्य मम्मट के अनुसार –

" स मुख्योडर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोडस्याभिधोच्यते । । "

अर्थात " साक्षात संकेतिता (गुण , जाति, द्रव्य तथा क्रियावाचक) अर्थ जिसे मुख्य अर्थ कहा जाता है , उसका बोध कराने वाले व्यापार को अभिधा व्यापार या अभिधा शब्द शक्ति कहा जाता है । "

अभिधा शब्द शक्ति के उदाहरण

हरि पुस्तक पढ़ रहा है।
खेत में गाय चर रही है।
उसके हार के मोती किमती है।
गाय दुध देती है।
राम एक शरारती बच्चा है।

अभिधा शब्द शक्ति के भेद/प्रकार

अभिधा शक्ति के द्वारा तीन प्रकार के शब्दों का अर्थ बोध होता है –

1. रूढ़ शब्द
2. यौगिक शब्द
3. योगरूढ़ शब्द

रूढ़ शब्द की परिभाषा

1. रूढ़ शब्द – वे शब्द जिनके खंड न हो , सम्पूर्ण शब्दों का एक ही अर्थ प्रकट हो , उन्हें रूढ़ शब्द कहा जाता है। ये शब्द जातिवाचक होते है।

जैसे – लता , नदी , पर्वत , तोता , कबूतर , बालक , हाथी , बंदर , घोड़ा आदि।

यौगिक शब्द की परिभाषा

2. यौगिक शब्द – वे शब्द जिनका अर्थ बोध अवयवों (प्रकृति और प्रत्ययों) की शक्ति के द्वारा होता है , यौगिक शब्द कहलाते है।
अर्थात जो शब्द अन्य शब्दों के योग से बने होते है तथा जिनके प्रत्येक खण्ड का कोई अर्थ होता है , यौगिक शब्द कहलाते है।
जैसे – देशवासी , प्रभाकर , दिवाकर , सुधांशु , पाठशाला , डाकघर आदि।

3. योगरूढ़ शब्द — ये शब्द " रूढ़ और यौगिक " दोनों शब्दों से मिलकर बने होते है।

सामान्यतः ये शब्द यौगिक होते है परंतु एक विशेष अर्थ के लिए रूढ़ हो जाते है , योगरूढ़ शब्द कहलाते है।

अर्थात जब यौगिक शब्द अपने सामान्य अर्थ को छोड़ विशेष अर्थ बताने लगें , तो वे " योगरूढ़ शब्द " कहलाते है।

जैसे – लम्बोदर (गणेश भगवान)

पंकज (कमल)

उपर्युक्त वाक्यों में " लम्बोदर " दो शब्दों ' लम्बा + उदर " से मिलकर बना है तथा इसके लिये रूढ़ शब्द " गणेश " हो जाएगा , जो एक अलग अर्थ प्रकट कर रहा है , अतः यह एक योगरूढ़ शब्द है।

अभिधा शब्द शक्ति का महत्व –

✦ " अभिधा " शब्द शक्ति की प्रथम शक्ति है , जो शब्दों के शब्दकोशीय अर्थ का बोध कराती है। इसमें शब्द का सामान्य अर्थ में प्रयोग किया जाता है , यह शब्द के सांकेतित अर्थ को प्रकट करती है।

✦ कवि " देव " ने अभिधा शक्ति को उतम काव्य कहा है , उन्होनें शब्द शक्ति के लिए एक वाक्य दिया है –

" अभिधा उतम काव्य है , मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस कुटिल , उलटी कहत कवीन।। "